Worksheet - 8 Subject: - Hindi Class: - IV Teacher: - Mrs. Jitender Kaur

Name: _____ Class & Sec: _____ Roll No. _____ Date: 08.05.2020

2

आलस्य का फल

- आलस्य न करना
- सेवा भाव

एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। वह ईमानदार और सज्जन था, लेकिन बहुत आलसी भी था। उसका मानना था कि जो कुछ भी होता है, भाग्य से होता है। इस कारण वह बैठा रहता तथा कुछ काम न करता।

एक दिन उसके घर एक साधु आया। ब्राह्मण और उसकी पत्नी ने साधु का खूब आदर-सत्कार किया। यह देखकर साधु बहुत प्रसन्न हुआ। वह बोला– "हे ब्राह्मण! मैं तुम लोगों के आतिथ्य-सत्कार से बहुत प्रसन्न हूँ। मेरे पास एक जादुई पत्थर है। यदि इसे तुम लोहे से स्पर्श करोगे तो वह सोना बन जाएगा। परंतु एक बात का ध्यान रखना कि यह काम तुम्हें केवल सात दिनों में ही पूरा करना है। मैं सात दिन के बाद इसे ले जाऊँगा।" ब्राह्मण ने खुशी-खुशी

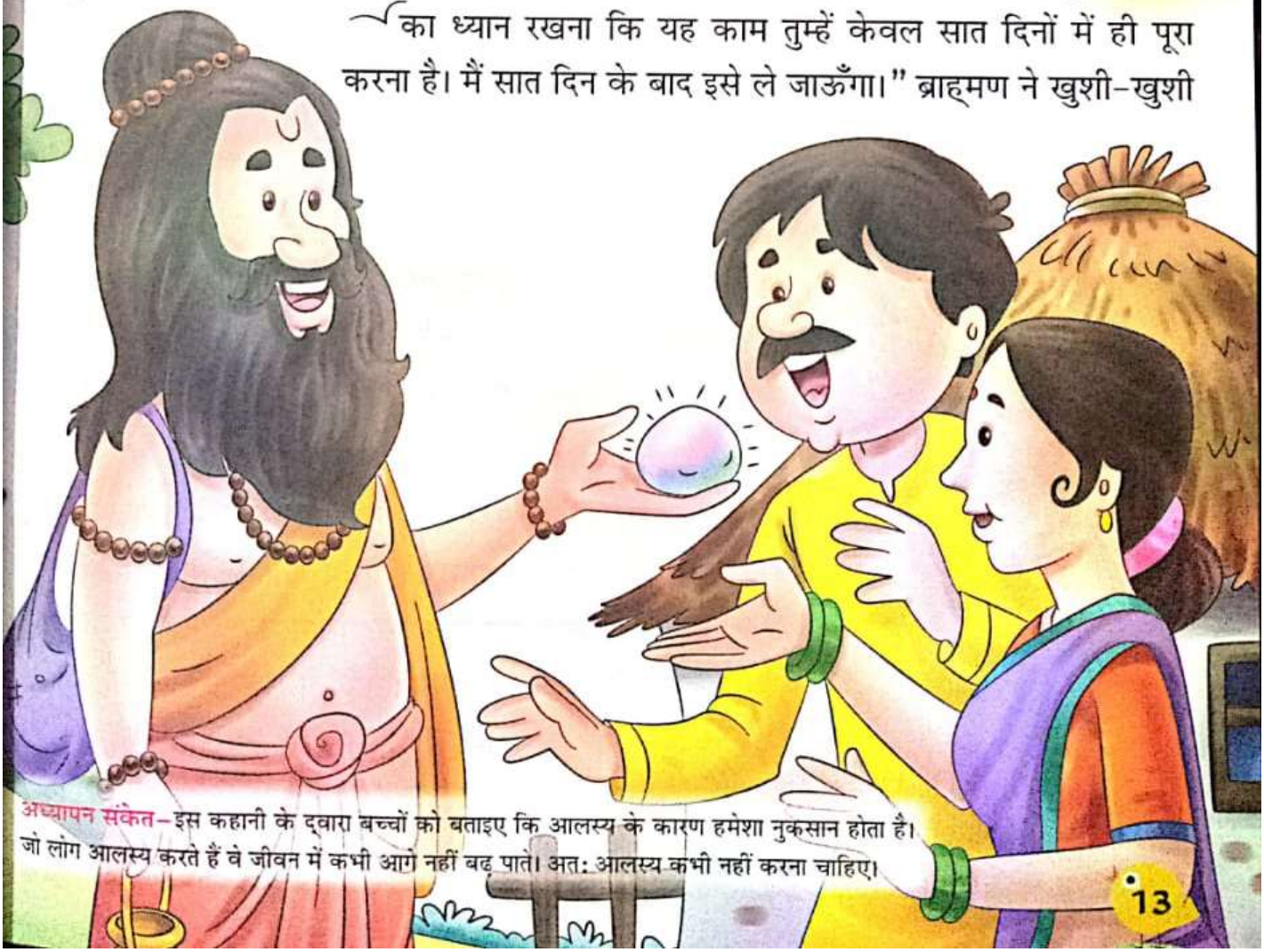

अध्यापन संकेत– इस कहानी के द्वारा बच्चों को बताइए कि आलस्य के कारण हमेशा नुकसान होता है। जो लोग आलस्य करते हैं वे जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पाते। अत: आलस्य कभी नहीं करना चाहिए।

वह जादुई पत्थर साधु से ले लिया। साधु प्रसन्नतापूर्वक वहाँ से चला गया।

साधु के जाने के बाद ब्राह्मण ने सोचा कि अभी तो मेरे पास सात दिन हैं। मैं कल से यह काम शुरू कर दूँगा। यह सोचकर ब्राह्मण चादर ओढ़कर सो गया।

अगले दिन ब्राह्मण सुबह उठा। उसे साधु की बात याद आई। उसने घर में लोहा ढूँढ़ना शुरू किया। उसे घर में बहुत थोड़ा-सा ही लोहा मिला। ब्राह्मण ने उसे सोना बनाया और बाज़ार में जाकर बेच आया। उसके बाद उसने कुछ सामान खरीदा।

अगले दिन वह ब्राह्मण अपनी पत्नी के बहुत ज़ोर देने पर लोहा खरीदने बाज़ार गया तो लोहा कुछ महँगा था। वह घर लौट आया। दो-तीन दिन बाद वह फिर बाज़ार गया। उस दिन लोहा और अधिक महँगा था। उसने सोचा– "कोई बात नहीं, अभी एक-दो दिन में भाव अवश्य ही नीचे आ जाएगा, तब ले लूँगा।" इस प्रकार करते-करते दिन निकल गए किंतु लोहा सस्ता नहीं हुआ।

आठवें दिन ब्राह्मण घर में सो रहा था। तभी किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। ब्राह्मण की पत्नी ने दरवाज़ा खोला तो सामने साधु खड़ा था। ब्राह्मण की पत्नी ने तुरंत ब्राह्मण को उठाया। ब्राह्मण साधु को देखकर अवाक् रह गया। साधु ने कहा– "हे ब्राह्मण! मैं अपना जादुई पत्थर लेने आया हूँ।" ब्राह्मण घबरा गया और बोला– "मैंने तो अभी तक कुछ भी सोना नहीं बनाया। क्या आप मुझे थोड़े दिन और दे सकते हैं?"

साधु ने कहा– "हे ब्राह्मण! मैं अब यह जादुई पत्थर तुम्हारे पास नहीं छोड़ सकता। मैंने तुम्हें सात दिन का समय दिया था। तुमने समय का सदुपयोग नहीं किया। जो व्यक्ति समय का सदुपयोग करना नहीं जानता, वह जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता।"

इतना कहकर साधु जादुई पत्थर लेकर वहाँ से चला गया। ब्राह्मण और उसकी पत्नी सिर धुनते रह गए।

श्रुतलेख

(Writing Skills)

ब्राह्मण	ईमानदार	सज्जन	आलसी	भाग्य	सत्कार
जादुई	पत्थर	स्पर्श	महँगा	अवाक्	सदुपयोग

शब्द-अर्थ

ईमानदार – सच्चा, विश्वसनीय
सज्जन – भला आदमी
भाग्य – किस्मत
आतिथ्य-सत्कार – मेहमान की सेवा
स्पर्श – छूना
भाव – दाम, कीमत
अवाक् – हैरान
सिर धुनना – पछताना